हलीम चला चाँद पर

कहानी: सी. एन. सुब्रह्मण्यम्
चित्र प्रिया कुरियन

एकलव्य

मूल्य: ₹ 12.00

हलीम ने एक दिन सोचा, आज मैं चाँद पर जाऊँगा।

रॉकेट कारखाना

वह रॉकेट के कारखाने
में गया और एक रॉकेट
पर बैठकर चल दिया।

चलते-चलते अँधेरा हो गया। हलीम को डर लगने लगा। उसको तो चाँद तक का रास्ता पता नहीं था।

थोड़ी देर में उसे चाँद दिखा
और वह खुश हो गया।

चाँद पर हलीम को खूब
सारे गड्ढे दिखे और
बड़े-बड़े पहाड़ भी ।

लेकिन वहाँ कोई पेड़ या जानवर नहीं थे।
लोग भी नहीं थे।

हलीम ने सोचा, यह भी कोई जगह है!
चलो वापिस घर चलें। वह रॉकेट
में बैठकर घर लौट आया।

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72 द्वारा
प्रकाशित व भण्डारी प्रेस भोपाल से मुद्रित।
मई 2023 (5000 प्रतियाँ)